चलो रे मन वृन्दावन चलिए | by Raghvender Sarkar

चलो रे मन वृन्दावन चलिए
करेंगे दर्शन नित ठाकुर के
कुञ्ज गलिन में रहिये
चलो रे मन.....

राधा नाम को गाये गाये के
रसना सफल बनाये जा
लगा प्रीतम्मा प्रेम डगर की
अपना भाग्य जगाये जा
रसिकन की सँगत कर प्यारे
बांके के बांके बनिए
चलो रे मन.....

प्रेम ही है आधार सबन का
श्री हरी रास ने गाया था
प्रगट भये पावन निधि वन में
भक्त का मान बढ़ाया था
जगत नचैया खुद नाचे जहाँ
वहीँ सखिन संग नाचिये
चलो रे मन.....

यमुना जल को पान करत ही
प्यास मिटे इस जीवन की
कमल बन कर लौट लगाऊं
सुध रहे न तन मन की
होकर मस्त रमण रेती में
खूब ही लौट लगाईये
चलो रे मन.....

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%9a%e0%a4%b2%e0%a5%8b-%e0%a4%b0%e0%a5%87-%e0%a4%ae%e0%a4%a8-%e0%a4%b5%e0%a5%83%e0%a4%a8%e0%a5%8d%e0%a4%a6%e0%a4%be%e0%a4%b5%e0%a4%a8-%e0%a4%9a%e0%a4%b2%e0%a4%bf%e0%a4%8f-by-raghvender-sarkar/